सच्चा रास्ता

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

सच्चा रास्ता

लेखक
मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

अनुवादक
डॉक्टर रफ़ीक़ अहमद

संपादक
मोहम्मद आरिफ़

(Hindi Translation of Urdu Booklet: ***Sachcha Rasta***)

First Published 2018

This book is copyright free.

Centre for Peace and Spirituality International

1, Nizamuddin West Market,

New Delhi-110013, India.

info@cpsglobal.org

www.cpsglobal.org

Tel. +9111-41431165

Goodword Books

1, Nizamuddin West Market

New Delhi-110013

Tel. +9111-41827083

Mob. +91-8588822672

email: info@goodwordbooks.com

www.goodwordbooks.com

विषय-सूची

इंसान की खोज 6
सत्य क्या है? 11
ख़तरे का अलार्म 17
पैग़ंबर की शिक्षाएँ.....22
मौत की तरफ़ 28
अंतिम शब्द 31

दो शब्द

सूरज अपने रोशन रूप में निकलता है और इंसान के ऊपर इस तरह चमकता है, जैसे वह कोई संदेश देना चाहता हो, लेकिन वह कुछ कहने से पहले डूब जाता है। पेड़-पौधे अपनी हरी-भरी शाखाएँ निकालते हैं, नदी अपनी लहरों के साथ बहती रहती है। ये सब भी कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन इंसान उनके पास से गुज़र जाता है, बिना इसके कि उनका कोई बोल उसके कान में पड़ा हो। आसमान की ऊँचाई, धरती के दृश्य, सब एक बहुत बड़े 'सामूहिक' हिस्सेदार दिखाई देते हैं, लेकिन उनमें से हर एक शांत खड़ा हुआ है। वह इंसान से बातचीत नहीं करता।

कायनात क्या गूँगे शाहकारों का एक बड़ा अजायबघर है? नहीं। हक़ीक़त यह है कि उनमें से हर एक के पास ईश्वर का एक संदेश है और वह उसका अनंत भाषा में प्रसार कर रहा है, लेकिन इंसान दूसरी आवाज़ों में इतना खोया हुआ है कि उसे कायनात के शांत शब्द सुनाई नहीं देते। पैग़ंबर इसी निःशब्द ईश्वरीय वार्तालाप को शब्द देता है। वह शांत संदेश को हमारे लिए सुनने के योग्य बनाता है। पैग़ंबर बताता है कि ईश्वर का वह धर्म कौन-सा है, जिसकी उसे इंसान से भी उम्मीद है और बाक़ी कायनात से भी।

ईश्वर ने मानव-जाति की शुरुआत से ही पैग़ंबरों द्वारा उनका मार्गदर्शन किया। ईश्वर ने समस्त मानव-जाति में लोगों की उन्हीं की अपनी जाति, भाषा, इलाक़े इत्यादि में पैग़ंबर भेजे, ताकि वे एकेश्वरवाद का संदेश लोगों तक आसानी से पहुँचा सकें। समय के साथ पैग़ंबर के

लाए हुए संदेश में लोगों ने अपने स्वार्थ और और कमज़ोरी की वजह से बदलाव किया। ईश्वर ने इसको ठीक करने के लिए दोबारा पैग़ंबर भेजे। पैग़ंबरों का सिलसिला पूरे इंसानी इतिहास में जारी रहा और पैग़ंबर मुहम्मद पर आकर समाप्त हो गया।

हज़रत मुहम्मद पर यह सिलसिला इसलिए समाप्त हो गया, क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद का लाया हुआ संदेश 'क़ुरआन' और आपकी ज़िंदगी एवं कही हुई बातें 'हदीस और सुन्नत' आज भी बिना किसी बदलाव के अपने मूल रूप में किताबों में मौजूद है।

पैग़ंबर के लाए हुए इस धर्म की बुनियाद क़ुरआन पर है, जो ईश्वर की ओर से अरबी भाषा में उतारा गया है। फिर इस किताब का अधिक स्पष्टीकरण सुन्नत से होता है, जो हज़रत मुहम्मद की ज़िंदगी और शिक्षा-दीक्षा के रूप में किताबों के विशाल संग्रह में क्रमानुसार मौजूद है। जो इंसान गंभीरता से उसको जानना चाहता हो, उसे चाहिए कि वह उन किताबों को पढ़े, क्योंकि यही वे किताबें हैं, जो ईश्वरीय धर्म को समझने के लिए वास्तविक स्रोत की हैसियत रखती हैं। प्रस्तुत किताब इसी ईश्वरीय धर्म के सार्वजनिक और आरंभिक परिचय के लिए तैयार की गई है। अगर वह पढ़ने वाले के अंदर यह शौक़ पैदा कर दे कि वह इस धर्म का अधिक विवरणात्मक (detailed) अध्ययन करके हक़ीक़त को जानने की कोशिश करे तो यही उसकी कामयाबी के लिए काफ़ी है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान
27 दिसंबर, 1980

इंसान की खोज

इंसान एक पूर्ण संसार चाहता है, लेकिन वह ऐसे संसार में रहने के लिए मजबूर है, जो पूर्ण नहीं। हमारी ख़ुशियाँ बहुत ही कम समय के लिए हैं। हमारी हर कामयाबी अपने साथ नाकामी का नतीजा लिये हुए है। हम अपनी उम्मीदों की 'सुबह' को पूरी तरह से देख भी नहीं पाते कि 'शाम' उसे घेर लेती है। हमारी ज़िंदगी के पेड़ पर हरियाली और वसंत के कुछ साल बीत भी नहीं पाते कि दुर्घटना, बुढ़ापा और मौत उसे इस तरह ख़त्म कर देते हैं, जैसे कि उसकी कोई हक़ीक़त ही न थी।

फूल कितने ख़ूबसूरत होते हैं, लेकिन फूल सिर्फ़ इसलिए खिलते हैं कि वे मुरझा जाएँ। सूरज की किरणें कितनी कोमल हैं, लेकिन सूरज की किरणों के लिए यह तय है कि वह कुछ देर के लिए चमके और उसके बाद रात के अँधेरे का पर्दा उसे छुपा ले। एक ज़िंदा इंसान कैसा चमत्कारी अस्तित्व है, लेकिन कोई इंसान अपने आपको मौत और दुर्घटनाओं से नहीं बचा सकता। यही वर्तमान संसार की सभी चीज़ों का हाल है। यह संसार इतना उत्तम और अर्थपूर्ण है कि इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, लेकिन यहाँ की हर ख़ूबी मिट जाने वाली है। इतना उत्तम होने के बावजूद यहाँ की हर चीज़ में कोई-न-कोई दोष का पहलू है, जो किसी भी प्रकार उससे अलग नहीं होता।

जो ईश्वर अपने आपमें पूर्ण हो, वह एक ऐसे संसार को पैदा

करने पर संतुष्ट नहीं हो सकता, जो पूर्ण न हो। पूर्ण का अपूर्ण पर ठहर जाना संभव नहीं। यही इस बात का सबूत है कि वर्तमान संसार अंतिम नहीं। ज़रूरी है कि इसके बाद एक और संसार आए, जो वर्तमान संसार की कमी को पूरा करने वाला हो।

वर्तमान संसार के बारे में यह पता चल चुका है की इसकी एक शुरुआत है। इसकी उत्पत्ति लगभग 14 बिलियन साल पहले एक विशेष समय में हुई। इससे साबित होता है कि इस संसार का एक रचयिता है। वह हमेशा से है और हमेशा तक अस्तित्व रखने वाला है।

इस संसार को वही पैदा कर सकता है, जो पैदा न हुआ हो, वह हमेशा से हो। ईश्वर अगर हमेशा से न हो तो वह संसार कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकता, जो हमेशा से नहीं है। हक़ीक़त यह है कि ऐसे संसार को मानना, जिसकी एक शुरुआत हो, यह ज़रूरी है कि हम एक रचयिता को मानें, जो कभी पैदा न हुआ हो। पैदा होने वाले संसार का अस्तित्व यह साबित करता है कि यहाँ एक रचयिता मौजूद हो, जो कभी पैदा नहीं हुआ हो। रचयिता अगर हमेशा से न होता तो वह सिरे से मौजूद ही न होता और जब रचयिता मौजूद न होता तो संसार के अस्तित्व में आने का कोई सवाल ही न था।

जब हम कहते हैं कि संसार '25 नवंबर' को पैदा हुआ तो इसका मतलब यह होता है कि 25 नवंबर से पहले भी कोई मौजूद था, जिसने उसे पैदा किया। अगर कहा जाए कि पैदा करने वाला

भी किसी पिछले '25 नवंबर' को पैदा हुआ था तो यह बात बिल्कुल बेमतलब होगी। पैदा करने वाला अगर किसी पिछले 25 नवंबर को पैदा होने वाला हो तो वह कभी पैदा ही नहीं हो सकता। हक़ीक़त यह है कि रचयिता हमेशा से था, इसलिए उसने ऐसे संसार को पैदा किया, जो हमेशा से नहीं था। अगर वह हमेशा से न होता तो वह सिरे से मौजूद न होता, फिर इस नश्वर संसार का अस्तित्व कहाँ से आता? ईश्वर हमेशा से है और इसीलिए ईश्वर एक पूर्ण हस्ती है, क्योंकि हमेशा से होना सबसे बड़ा कमाल है। जो हमेशा से हो, वह अनिवार्य रूप से पूर्ण भी होगा। हमेशा से होना और पूर्णता दोनों कभी एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते।

वर्तमान संसार ईश्वरीय गुणों का प्रदर्शन है, लेकिन वर्तमान संसार में कमी और सीमितता का होना बताता है कि वर्तमान संसार ईश्वर के गुणों का पूर्ण प्रदर्शन नहीं। पूर्ण एवं अनंत ईश्वर के गुणों का पूर्ण प्रदर्शन वही है, जो स्वयं भी पूर्ण एवं अनंत हो। हक़ीक़त यह है कि हमारे संसार को अभी एक और संसार का इंतज़ार है। ईश्वर के गुणों का प्रदर्शन अपनी पूर्णता के लिए अभी एक और प्रदर्शन की माँग करता है।

स्वर्ग ईश्वर का वह संसार है, जहाँ उसके गुण अपने पूरे कमाल के साथ प्रकट होंगे। स्वर्ग उन सभी दोषों से मुक्त होगा, जिनका हम वर्तमान संसार में अनुभव करते हैं। स्वर्ग ईश्वर के उस कमाल का प्रदर्शन है कि वह पूर्णता को हमेशा के लिए पैदा कर सकता है। वह

आनंद को असीमित बनाने का अधिकार रखता है। वह ऐसे संसार को पैदा कर सकता है, जहाँ अथाह शांति हो और जिसका सुख व चैन कभी समाप्त न हो सके।

हर आदमी एक अदृश्य शांति की खोज में है। हर आदमी एक ऐसे पूर्ण संसार का प्यासा है, जिसे वह अभी तक पा न सका। यह प्यास इस संसार में अजनबी नहीं। जो कायनात एक ऐसे ईश्वर की गवाही दे रही हो, जो हमेशा से हो, वहाँ हमेशा रहने वाले एक संसार का अस्तित्व में आना उतना ही संभव है, जितना ख़ुद इस ख़त्म होने वाले संसार का अस्तित्व में आना, क्योंकि जिस कायनात का रचयिता ख़ुद हमेशा से हो, वह अपने गुणों के ऐसी कायनात के प्रदर्शन पर संतुष्ट नहीं हो सकता, जो ख़त्म होने वाली हो । जिस ईश्वर ने 'कुछ नहीं' (nothing) से 'कुछ भी' (something) को पैदा किया, वह यक़ीनन 'कुछ भी' में हमेशा बाक़ी रहने की शान भी पैदा कर सकता है और यक़ीनन दूसरा कारनामा पहले कारनामे से कुछ मुश्किल नहीं।

ईश्वर हमेशा से है और हमेशा रहेगा। यह ईश्वर का एक बहुत ही ऊँचे दर्जे का कमाल है। इस कमाल में उसका कोई भी भागीदार नहीं। यह ऐसा कमाल है, जो केवल एक ईश्वर के लिए ही उचित है। वह स्वर्ग, जो ईश्वर के इन गुणों का प्रदर्शन हो, वह ऐसी आश्चर्यजनक चीज़ होगी, जिसकी आज कोई इंसान कल्पना नहीं कर सकता। वह ख़ूबसूरती, जिसके लिए कभी मुरझाना न हो। वह आनंद, जो कभी

समाप्त होने वाला न हो। वह ऐश, जिसका सिलसिला हमेशा जारी रहे। आशाओं एवं इच्छाओं का वह संसार, जिसके गुणों का कभी पतन न हो, ऐसा स्वर्गिक संसार इतनी आश्चर्यजनक सीमा तक आनंदमय होगा कि आदमी नींद में भी उससे अलग नहीं होना चाहेगा, चाहे उस पर अरबों-खरबों साल क्यों न बीत जाएँ।

इंसान हमेशा एक ऐसी ज़िंदगी की तलाश में रहता है, जिसमें उसे हमेशा सुख प्राप्त हो। यह तलाश सही भी है और इंसानी प्रकृति के अनुसार भी, लेकिन हमारे सपनों की यह ज़िंदगी हमें वर्तमान संसार में नहीं मिल सकती। वर्तमान संसार में अनंत आनंद की व्यवस्था करना संभव नहीं। यहाँ वह साधन उपलब्ध ही नहीं, जो अनंत आनंद और सुखमय संसार को बनाने के लिए आवश्यक हैं।

पैग़ंबर ने बताया कि वर्तमान संसार को ईश्वर ने इम्तिहान की जगह बनाया है, न कि इनाम पाने की जगह। यहाँ केवल वे साधन इकट्ठे किए गए हैं, जो आदमी के इम्तिहान के लिए ज़रूरी हैं। सुख और ख़ुशी से भरपूर हमेशा की ज़िंदगी हासिल करने के लिए जिन साधनों की ज़रूरत है, वे दूसरे संसार में उपलब्ध होंगे, जो वर्तमान संसार के बाद हमारे सामने आने वाला है। हमारे और उस अगले संसार के बीच मौत का फ़ासला है। मौत इंसान के इम्तिहान की समाप्ति का समय है और उसी के साथ आने वाले स्थायी संसार में जाने का भी।

जो आदमी यह चाहता हो कि उसे उसके सपनों की ज़िंदगी

हासिल हो, उसे वर्तमान संसार में अपना स्वर्ग बनाने की बेकार की कोशिशों में अपना समय बरबाद नहीं करना चाहिए। इसके बजाय उसे यह कोशिश करनी चाहिए कि वह वर्तमान संसार में होने वाले इम्तिहान में पूरा उतरे। वह संसार में ईश्वर का बंदा बनकर ज़िंदगी गुज़ारे। वह पूरी ईमानदारी के साथ पैग़ंबर को फ़ॉलो (follow) करे। वह अपनी आज़ादी को ईश्वर के आदेशों की पाबंदी में दे दे।

जो लोग आज के इम्तिहान में पूरे उतरेंगे, वे अगली ज़िंदगी में अपने सपनों का संसार प्राप्त करेंगे। जो लोग इम्तिहान में नाकाम रहेंगे, वे ज़िंदगी के अगले पड़ाव में इस हाल में पहुँचेंगे कि हमेशा की बरबादी के सिवा और कोई चीज़ न होगी, जो वहाँ उनका स्वागत करे।

सत्य क्या है?

एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक सीधी रेखा केवल एक होती है। इसी तरह बंदे को ईश्वर तक पहुँचाने वाला सीधा रास्ता भी कोई एक ही रास्ता हो सकता है। इसी रास्ते का नाम सत्य है। अब सवाल यह है कि वह सत्य क्या है और उसकी खोज किस प्रकार की जाए?

हमारी क़िस्मत से सत्य जिस प्रकार एक है, उसी प्रकार वह मैदान में भी सिर्फ़ एक है। यहाँ कई चीज़ें नहीं हैं, जिनके बीच चुनाव का सवाल हो। यहाँ तो एक ही चीज़ है और हमारे लिए

इसके सिवा और कोई विकल्प नहीं कि हम इस एक को मान लें। यह इकलौता सत्य हज़रत मुहम्मद की शिक्षाएँ हैं। अगर आदमी सत्य की खोज में हक़ीक़त में गंभीर हो तो वह पाएगा कि ईश्वर ने उसे चयन के इम्तिहान में नहीं डाला। ईश्वर ने हमें एक ऐसे संसार में रखा है, जहाँ चयन सत्य और झूठ के बीच है, न कि सत्य और सत्य के बीच। (क़ुरआन, 10:32)

दर्शनशास्त्र (philosophy) सत्य की खोज में कम-से-कम पाँच हज़ार साल से कोशिश में लगा हुआ है, लेकिन उसकी लंबी खोज ने उसे सिर्फ़ इस जगह तक पहुँचाया है कि वह ख़ुद स्वीकार कर रहा है कि वह आख़िरी सत्य तक नहीं पहुँच सका और न कभी पहुँच सकता। दर्शनशास्त्र का तरीक़ा यह है कि वह बौद्धिक चिंतन-मनन के माध्यम से सत्य तक पहुँचने की कोशिश करता है, लेकिन बुद्धि अपने ज्ञान की हद में सोचती है और सत्य का मामला एक ऐसा मामला है, जिसके बारे में कोई वास्तविक राय बनाने के लिए संपूर्ण संसार का ज्ञान होना आवश्यक है। कोई दार्शनिक (philosopher) कभी पूरी कायनात के ज्ञान तक नहीं पहुँच सकता, इसीलिए वह सत्य के बारे में कोई आख़िरी राय भी नहीं बना सकता।

विज्ञान ने इस मामले में ख़ुद को मैदान में खड़ा ही नहीं किया है। विज्ञान अपनी खोज उन मामलों में जारी करता है, जहाँ बार-बार के अनुभव के द्वारा निष्कर्ष तक पहुँचना संभव हो। विज्ञान फूल की

केमिस्ट्री को चर्चा का विषय बनाता है, लेकिन वह फूल की ख़ुशबू को अपनी चर्चा से ख़ारिज कर देता है, क्योंकि फूल के रासायनिक तत्व तौले और नापे जा सकते हैं, लेकिन फूल की ख़ुशबू को तौलने और नापने का कोई ज़रिया विज्ञान के पास नहीं। इस प्रकार विज्ञान ने अपनी चर्चा की हद को ख़ुद ही सीमित कर लिया है। अत: विज्ञान ने पहले से ही यह स्वीकार कर लिया है कि वह हक़ीक़तों के संसार के मात्र आंशिक पहलू से ही चर्चा करता है। वह पूरे सत्य के बारे में कोई चर्चा करने की स्थिति में नहीं।

आध्यात्मिक (spiritual) लोगों का दावा है या कम-से-कम उनके मानने वाले यह विश्वास रखते हैं कि वे सत्य को जानते हैं और सत्य के बारे में पक्की जानकारी दे सकते हैं, लेकिन इस विश्वास के लिए कोई बुनियाद नहीं। आध्यात्मिक लोग अपने दावे के अनुसार जिसके ज़रिये सत्य तक पहुँचते हैं, वह आध्यात्मिक अभ्यास है, लेकिन नाममात्र का आध्यात्मिक अभ्यास हक़ीक़त में शारीरिक अभ्यास है और शारीरिक अभ्यासों के ज़रिये आध्यात्मिक खोज स्वयं एक बेबुनियादी बात है। दूसरा यह कि कोई भी आध्यात्मिक आदमी अपने व्यक्तित्व में उन सीमाओं से परे नहीं है, जिन सीमाओं का शिकार उस जैसे दूसरे सभी इंसान हैं। दूसरे इंसान अपनी जिन सीमाओं की वजह से सत्य तक नहीं पहुँच सकते, वही सीमाएँ ख़ुद उन आध्यात्मिक लोगों के रास्ते में भी रुकावट हैं। किसी भी प्रकार का अभ्यास आदमी को उसकी प्राकृतिक सीमाओं से मुक्त नहीं कर

सकता। अत: किसी भी प्रकार का अभ्यास उसे पूरे सत्य तक नहीं पहुँचा सकता।

इसके बाद मैदान में केवल पैग़ंबर रह जाते हैं। पैग़ंबर वह इंसान है, जो यह कहता है कि ईश्वर ने उसे चुना है और उस पर सत्य का ज्ञान उतारा है, ताकि वह उसको दूसरे सभी लोगों तक पहुँचा दे। अपनी प्रकृति की सीमा तक यही एक दावा है, जो इस मामले में विश्वास के योग्य है, क्योंकि सत्य का वास्तविक ज्ञान सिर्फ़ ईश्वर को ही हो सकता है, जो अनादि और अनंत है और सारी हक़ीक़तों से प्रत्यक्ष रूप से परिचित है। ईश्वर का ईश्वर होना ही यह साबित करने के लिए काफ़ी है कि वह सत्य का पूरा ज्ञान रखता हो, इसलिए जो आदमी यह कहे कि उसे प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की ओर से सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका दावा हक़ीक़त में इस योग्य है कि इस मामले में उसका आदर किया जाए।

यहाँ एक प्रश्न है। पैग़ंबर हमारे संसार में एक नहीं, बल्कि बहुत से हैं। उनकी किताबें भी कई हैं, फिर किस पैग़ंबर को माना जाए? अगर इंसान सत्य की खोज में गंभीर हो तो इस सवाल का जवाब हासिल करने में कोई कठिनाई नहीं। नि:संदेह अतीत में ईश्वर ने बहुत से पैग़ंबर भेजे, लेकिन इंसान के पास अतीत की किसी भी घटना को मानने का एकमात्र मापदंड यह है कि उसका ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हो और एक के अतिरिक्त दूसरे सभी पैग़ंबर उस मानवीय मापदंड पर पूरे नहीं उतरते। आज एक ही पैग़ंबर

ऐतिहासिक पैग़ंबर है और दूसरे सभी पैग़ंबर अब व्यावहारिक रूप से आस्था पर टिके हुए पैग़ंबर हैं।

संसार में जितने भी पैग़ंबर आए हैं, उनमें सिर्फ़ एक ही पैग़ंबर हैं, जिनको पूर्ण अर्थों में ऐतिहासिक रूप से साबित होने का दर्जा प्राप्त है और वह पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद हैं। आपके बारे में हर बात ऐतिहासिक रूप से ज्ञात और साबित है। वर्तमान समय के किसी इंसान के बारे में हम जितना जानते हैं, उससे भी अधिक हम पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद के बारे में जानते हैं। आपके अतिरिक्त दूसरे सभी पैग़ंबर परंपराओं के अंधकार में गुम हैं। उनके बारे में पूरी ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध नहीं और न उनकी दी हुई किताबें आज अपने मूल रूप में सुरक्षित हैं। यह केवल हज़रत मुहम्मद हैं, जिनकी ज़िंदगी के बारे में ऐतिहासिक रूप से पूरी जानकारी है और वह किताब भी बिना किसी बदलाव के असली हालत में मौजूद है, जिसे आपने यह कहकर लोगों के हवाले किया था कि यह मेरे पास ईश्वर की ओर से आई है।

हक़ीक़त यह है कि सिर्फ़ ज्ञान एवं बौद्धिक दृष्टि से देखा जाए तो 'सत्य क्या है' के सवाल का जवाब न सिर्फ़ वैचारिक रूप से एक है, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी मैदान में केवल एक ही जवाब मौजूद है। यहाँ दूसरा कोई जवाब हक़ीक़त में मौजूद ही नहीं। हमें अनेक जवाबों में से एक जवाब को नहीं चुनना है, बल्कि एक ही मौजूद जवाब को स्वीकार करना है।

यह सत्य ईश्वरीय वाणी है और ईश्वरीय वाणी हमेशा एक रहती है। जिस प्रकार संसार की दूसरी चीज़ों के लिए ईश्वर का आदेश हमेशा से एक है, उसी प्रकार इंसान के लिए भी ईश्वर का आदेश एक है और हमेशा एक रहेगा। ज़मीन और आसमान का क़ानून अरबों साल बीत जाने पर भी नहीं बदलता। पेड़ और पानी के सिद्धांत, जो एक जगह में होते हैं, वही दूसरी जगह में होते हैं। यही स्थिति इंसान के बारे में ईश्वर के आदेश की भी है। इंसान के बारे में ईश्वर का जो आदेश है, वह आज भी वही है, जो हज़ारों साल पहले था। वह एक देश के इंसानों के लिए भी वही है, जो दूसरे देश के इंसानों के लिए।

ज़िंदगी के कुछ पहलू ऐसे हैं, जो बदलते रहते हैं, जैसे—सवारियाँ, मकान इत्यादि, लेकिन सत्य का संबंध इस प्रकार की चीज़ों से नहीं। सत्य का संबंध उस इंसान से है, जो हमेशा एक हालत में रहता है। सत्य का संबंध इससे है कि आदमी किसको अपना रचयिता एवं स्वामी समझे? वह किसके आगे झुके और किसकी इबादत करे? वह किससे डरे और किससे प्यार करे? वह अपनी कामयाबी और नाकामयाबी को किस मापदंड से जाँचे? उसकी ज़िंदगी का मक़सद और उसकी भावनाओं का केंद्रबिंदु क्या हो? लोगों के बीच रहते हुए वह किन नियमों के अंतर्गत उनसे व्यवहार करे?

सत्य का संबंध ज़िंदगी के इन्हीं मामलों से है और यह मामले वह हैं, जिनका कोई संबंध युग या जगह से नहीं। उनकी हर जगह पर और हर दौर में समान रूप से हर एक से उम्मीद की जाती है। ईश्वर एक है और अनंत है। ठीक इसी प्रकार सत्य भी एक है और इसी के साथ अनंत भी।

ख़तरे का अलार्म

ज़िंदगी की हक़ीक़त क्या है? आम आदमी इस तरह के सवालों में उलझना पसंद नहीं करता। वह सोचता है कि जो कुछ है, बस यही दुनियावी ज़िंदगी है। यहाँ सम्मान और शांति के साथ अपनी आयु पूरी कर लो। इसके बाद न तुम होंगे और न तुम्हारी कोई समस्या। दूसरे लोग वे हैं, जो इस सवाल के बारे में सोचते हैं, लेकिन उनका सोचना दार्शनिक शैली में होता है। ऐसे लोगों की सारी कोशिश सिर्फ़ यह होती है कि वर्तमान संसार की कोई सैद्धांतिक व्याख्या प्राप्त कर ले। इस प्रकार की दार्शनिक व्याख्या संख्या में अलग-अलग होने के बाद भी केवल व्याख्याएँ हैं। वे आदमी के लिए कोई व्यक्तिगत समस्या पैदा नहीं करतीं। एक विश्वात्मा अपनी पूर्ति के लिए पूरे कारख़ाने को चला रही है या सारी चीज़ें किसी बड़ी चीज़ का अंश हैं। इस प्रकार के सैद्धांतिक तर्क-वितर्क से एक आदमी का व्यक्तिगत संबंध क्या है?

तीसरे प्रकार के लोग वह हैं, जिनके पास इस सवाल का कोई-न-कोई धार्मिक जवाब है, लेकिन इनमें भी आदमी के लिए कोई गंभीरता का पहलू नहीं। इनमें से किसी के नज़दीक ईश्वर का पुत्र सारे इंसानों के अपराधों का कफ़्फ़ारा* (atonement) बन चुका है। किसी के नज़दीक ज़िंदगी हमारी चेतना से परे एक ज़बरदस्ती का चक्रव्यूह है। आदमी एक ज़बरदस्ती की व्यवस्था के अंतर्गत बार-बार जन्म लेता है और बार-बार मरता है। कोई कहता है कि आदमी के जो कुछ इनाम और दंड हैं, इसी संसार की ज़िंदगी में हैं आदि।

ज़िंदगी की समस्याओं के बारे में इस तरह के जितने भी जवाब हैं, वे आपस में एक-दूसरे से बहुत अलग हैं, लेकिन इस दृष्टि से सब एक हैं कि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं, जो एक-एक आदमी के लिए व्यक्तिगत रूप से कोई गंभीर समस्या उत्पन्न करता हो। ये जवाब या तो जो कुछ हो रहा है, उसकी केवल व्याख्या हैं या हमारे लिए केवल एक प्रकार की आध्यात्मिक संतुष्टि प्राप्त करने का साधन हैं। वे इस प्रकार की कोई चीज़ नहीं हैं, जिसको किसी बड़े ख़तरे का अलार्म कहा जाए।

मगर पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद का जवाब इन सारे जवाबों से पूरी तरह से अलग है। दूसरे जवाबों में से कोई जवाब भी आदमी के लिए निजी सवाल नहीं बनता, वह आदमी के लिए कोई गंभीर समस्या पैदा नहीं करता, लेकिन पैग़ंबरे-इस्लाम का

* किसी पाप से शुद्धि के लिए किया जाना वाला कर्म, प्रायश्चित।

जवाब एक-एक आदमी को ऐसे ख़तरनाक किनारे पर खड़ा कर रहा है, जिसके बाद उसका अगला क़दम या तो तबाही के भयानक गड्ढे में पड़ने वाला है या कामयाबी के स्थायी संसार में। इसकी माँग है कि हर आदमी अपने बारे में अत्यधिक गंभीर हो। वह अँधेरे में चलने वाले उस यात्री से भी अधिक गंभीर हो जाए, जिसकी टॉर्च अचानक उसको सूचना दे कि उसके सामने ठीक अगले क़दम पर काला साँप रेंग रहा है।

हज़रत मुहम्मद ने जो संदेश दिया, वह सारी दुनिया के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। आपने बताया कि वर्तमान संसार के पश्चात् एक और विशाल संसार आने वाला है, जिसका नाम परलोक है। वहाँ हर आदमी से हिसाब लिया जाएगा और हर आदमी को उसके कर्मानुसार या तो स्थायी दंड मिलेगा या स्थायी पुरस्कार। वर्तमान संसार में जो चीज़ें आदमी का सहारा बनी हुई हैं, उनमें से कोई चीज़ वहाँ किसी के काम न आएगी। वहाँ न क्रय-विक्रय होगा, न दोस्ती काम आएगी और न किसी प्रकार की सिफ़ारिश चलेगी। (क़ुरआन, 2:254)

हज़रत मुहम्मद की यह चेतावनी आपके अस्तित्व को हर आदमी का निजी सवाल बना देती है। उसके अनुसार हर आदमी एक अत्यंत गंभीर परिणाम के किनारे खड़ा हुआ है। वह या तो आपकी सूचना पर विश्वास करके आपके निर्देश के अनुसार स्थायी स्वर्ग में जाने की तैयारी करे या आपकी सूचना को अनदेखा कर दे और लापरवाही की ज़िंदगी बिताकर स्थायी नरक का ख़तरा मोल ले।

यहाँ दो चीज़ें हैं, जो इस मामले को अधिक गंभीर बना रही हैं। आपके अतिरिक्त दूसरे लोग जो इस मामले में कोई बात कह रहे हैं, उनका पुष्टीकरण (confirmation) अत्यधिक संदिग्ध है। वे लोग जो कमाने और मर जाने को सब कुछ समझते हैं, उनके पास अपने विचारों के लिए सिरे से कोई तर्क नहीं। उनका बौद्धिक ढाँचा बिना किसी तर्क के केवल तुच्छ भावनाओं पर स्थापित है। दार्शनिक (philosophical) शैली में बात करने वाले लोगों के पास भी तर्क के नाम पर केवल अनुमान हैं। उनको न अपनी राय पर स्वयं विश्वास है और न वे कोई ऐसी बात प्रस्तुत करते, जिस पर दूसरा आदमी विश्वास कर सके।

इसके बाद वे लोग हैं, जो पैग़ंबरों और धार्मिक किताबों के संदर्भ से बोल रहे हैं। ये सैद्धांतिक तौर पर अपने पीछे एक विश्वसनीय आधार रखते हैं, लेकिन वे जिन किताबों और पैग़ंबरों का संदर्भ देते हैं, उनका संबंध प्राचीनकाल से है। उन किताबों और व्यक्तित्वों के बारे में आज हमारे पास कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं। अत: सैद्धांतिक तौर पर विश्वसनीय माध्यम से जुड़े होने के बाद वे जो कुछ प्रस्तुत कर रहे हैं, वह स्वयं विश्वास करने योग्य नहीं। अतीत की किसी चीज़ की सत्यता को जाँचने का मापदंड इतिहास है और इन शिक्षाओं का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं ।

लेकिन पैग़ंबरे-इस्लाम का मामला बिल्कुल अलग है। एक ओर यह कि किसी आदमी के पैग़ंबर होने का जो भी मापदंड निश्चित किया

जाए, उस पर आप पूरी तरह से पूरे उतरते हैं। आपके जीवन में वे सारे तत्व उच्चता के साथ मौजूद हैं, जो ईश्वर के एक पैग़ंबर में होने चाहिए। आपका पैग़ंबर* चुना जाना एक ऐसी साबित घटना है, जिसको स्वीकार न करना किसी भी स्थिति में संभव नहीं। दूसरी बात यह कि आपका जीवन एवं शिक्षाएँ मज़बूती के साथ आज भी हमारे पास मौजूद हैं। उनके ऐतिहासिक सबूत के बारे में कोई संदेह नहीं किया जा सकता। आपका दिया हुआ क़ुरआन आज भी उसी प्रकार उन्हीं शब्दों में मौजूद है, जिस प्रकार आपने उसको दिया था। आपके कथन एवं कार्य इस प्रकार मज़बूती के साथ हदीस और सीरत** की किताबों में मौजूद हैं, जैसे कि आज भी आप हमारे सामने बोल रहे हों और चल-फिर रहे हों। बिना किसी छोटे से संदेह के आदमी आज भी यह पता कर सकता है कि आपने क्या कहा और क्या किया।

पैग़ंबर की चेतावनी के अनुसार हम एक ऐसी हक़ीक़त से दो-चार हैं, जिसे हम बदल नहीं सकते। हम इसका सामना करने के लिए मजबूर हैं। मृत्यु अथवा आत्महत्या के द्वारा भी हम बच नहीं सकते, केवल दूसरे संसार में चले जाते हैं। सफलता एवं असफलता का एक नक़्शा रचयिता ने सदैव के लिए बना दिया है। किसी के लिए संभव नहीं है कि वह ईश्वरीय नक़्शे को बदल दे या अपने आपको उससे

*जिसने ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

**हज़रत मुहम्मद के कथन और जीवनी।

अलग कर ले। हमें केवल यह अधिकार है कि स्वर्ग या नरक में से किसी एक को चुन लें। हमें यह अधिकार नहीं कि दोनों से अलग होकर अपने लिए कोई तीसरा विकल्प बना लें।

यंत्रशाला (observatory) अगर भूकंप की सूचना दे तो यह एक ऐसी आने वाली दुर्घटना की सूचना होती है, जिसमें निर्णय का अधिकार सभी दूसरे पक्षों को होता है, सामना करने वाले को उसमें कोई अधिकार नहीं होता। आदमी या तो उससे भागकर स्वयं को बचाए या उसमें पड़कर स्वयं को नष्ट कर ले। इसी प्रकार क़यामत* भी एक ऐसा भूकंप है, जिसमें आदमी या तो पैग़ंबर का बताया हुआ उपाय अपनाकर स्वयं को बचाएगा या उसकी अनदेखी करके स्वयं को सदैव के लिए बरबादी में डाल देगा।

पैग़ंबर की शिक्षाएँ

ईश्वरीय धर्म एक धर्म है। सभी पैग़ंबरों के माध्यम से एक ही धर्म सदैव भेजा जाता रहा है, लेकिन इंसान ने अपनी असावधानी के कारण या तो उसे गँवा दिया या उसे बदल डाला। हज़रत मुहम्मद के माध्यम से उसी ईश्वरीय धर्म को दोबारा ज़िंदा किया गया और उसको उसी के मूल रूप में प्रस्तुत करके सदैव के लिए पुस्तकीय रूप में

*सृष्टि के विनाश और अंत का दिन।

सुरक्षित कर दिया गया। अब सारे इंसानों के लिए क़यामत तक यही प्रामाणिक धर्म है। ईश्वर की निकटता और परलोक में मुक्ति प्राप्त करने का इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं।

आपने बताया कि ईश्वर एक है। किसी भी प्रकार से उसका कोई भागीदार नहीं। उसी ने सभी चीज़ों को पैदा किया है और उसी को हर प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हैं। इंसान को चाहिए कि केवल उसी के आगे झुके और उसी की इबादत करे। उसी से माँगे और उसी से आशा रखे। हालाँकि ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता, लेकिन वह इंसान के इतना निकट है कि जब भी आदमी उसे पुकारता है, वह उसकी पुकार को सुनता है और उसका जवाब देता है। ईश्वर के निकट किसी इंसान का यह सबसे बड़ा अपराध है कि वह किसी भी प्रकार से किसी को ईश्वर का भागीदार या उसके बराबर ठहराए।

कोई इंसान या ग़ैर-इंसान ऐसा नहीं, जिसको ईश्वर और उसके बंदों के बीच माध्यम का स्थान प्राप्त हो। इंसान जब भी ईश्वर को पुकारता है, वह सीधा ईश्वर से जुड़ जाता है। इंसान को अपने रचयिता और स्वामी से जुड़ने के लिए किसी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं। उसी प्रकार परलोक में भी कोई ईश्वरीय न्यायालय में किसी का सिफ़ारिशी नहीं बन सकता। ईश्वर अपने हर बंदे का निर्णय स्वयं अपने ज्ञान के अनुसार करेगा। कोई नहीं जो उसके निर्णय को प्रभावित कर सके। ईश्वर अपना निर्णय करने में किसी का

पाबंद नहीं। ईश्वर के सारे निर्णय ज्ञान एवं न्याय की बुनियाद पर होते हैं, न कि सिफ़ारिश या निकटता की बुनियाद पर।

ईश्वर की इबादत कोई व्यावहारिक परिशिष्ट (appendix) नहीं है। यह संपूर्ण जीवन सहित ईश्वर के आगे झुक जाना है। ईश्वर की इबादत करने वाला वही है, जो ईश्वर की इबादत इस प्रकार करे कि ईश्वर ही उसका सब कुछ हो जाए। वह उसी की इबादत करे, उसी से डरे, उसी से प्रेम करे, उसी से उम्मीद रखे, वह उसी को अपने ध्यान एवं गतिविधियों का केंद्रबिंदु बना ले। ईश्वर की इबादत ईश्वर के सामने पूर्ण रूप से समर्पित होने का नाम है, न कि केवल किसी रस्म को सामयिक रूप से पूरा करने का।

बंदों के बीच रहते हुए आदमी को हर समय यह याद रखना चाहिए कि ईश्वर उसको देख रहा है और अपने ज्ञान के अनुसार उससे उसके कर्मों का हिसाब लेगा। इसलिए ज़रूरी है कि आदमी अत्याचार, झूठ, द्वेष, घमंड, ईर्ष्या, स्वार्थ, बुरा व्यवहार, लूट-खसोट, बेईमानी और इस प्रकार की दूसरी नैतिक बुराइयों से स्वयं को बचाए, ताकि ईश्वर के तराज़ू में वह अपराधी न ठहरे। ईश्वर से डरने वाला बंदों के मामले में निडर होकर नहीं रह सकता। जो लोग बंदों के साथ बुरा व्यवहार करेंगे, उन्हें ईश्वर से अपने लिए अच्छे व्यवहार की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। ईश्वर के अच्छे व्यवहार का पात्र केवल वह है, जो ईश्वर के यहाँ इस प्रकार पहुँचे कि उसने ईश्वर के बंदों के साथ अच्छा व्यवहार किया हो।

हज़रत मुहम्मद ने बताया कि ईश्वर की धरती पर ईश्वर के बंदों के लिए जीवन व्यतीत करने का केवल एक ही सही तरीक़ा है। यह कि आदमी संपूर्ण जीवन और सभी मामलों में ईश्वर का आज्ञाकारी बनकर रहे। इस आज्ञापालन के तरीक़े और सिद्धांत क़ुरआन में लिखे हुए हैं और पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद के जीवन में उसका व्यावहारिक नमूना मौजूद है। अब सारे इंसानों के लिए ईश्वर का मनोवांछित जीवन केवल यह है कि वह क़ुरआन से अपने लिए मार्गदर्शन प्राप्त करे और पैग़ंबर के नमूने को देखते हुए उसके अनुसार ज़िंदगी गुज़ारा करे।

हज़रत मुहम्मद ने जो धर्म प्रस्तुत किया है, वह आदमी के संपूर्ण जीवन के लिए एक साफ़ नक़्शा देता है और हर आदमी को उसी नक़्शे पर चलना है। इस नक़्शे की एक संक्षिप्त सांकेतिक व्यवस्था पाँच प्रमुख स्तंभों के रूप में निश्चित की गई है। यह पाँच स्तंभ पूरी इस्लामी ज़िंदगी के लिए बुनियाद का दर्जा रखते हैं।

पहला कलिमा शहादत 'ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह' को स्वीकार करना है। यह कलिमा मानो वह ऐलान है, जो यह स्पष्ट करता है कि आदमी एक दायरे से निकलकर दूसरे दायरे में चला गया। वह ग़ैर-इस्लाम को छोड़कर इस्लाम की लाइन में आ गया।

दूसरी चीज़ नमाज़ है यानी पैग़ंबर के बताए हुए तरीक़े के अनुसार पाँच वक़्त ईश्वर की इबादत करना। तीसरी चीज़ रोज़ा है

यानी हर साल रमज़ान में पूरे एक महीने तक सहनशीलता का वह अभ्यास करना, जिसे रोज़ा कहा जाता है। चौथी ज़कात है यानी आदमी अपने माल में से निश्चित विधि के अनुसार हर साल ईश्वर का अधिकार निकाले और उसको ईश्वर की निश्चित की हुई मदों में ख़र्च करे। पाँचवीं चीज़ हज है यानी सामर्थ्य के अनुसार ज़िंदगी में कम-से-कम एक बार बैतुल्लाह* का हज करना। आदमी जब ये पाँच शर्तें पूरी करता है तो वह पैग़ंबर के द्वारा स्थापित इस्लामी संप्रदाय में सम्मिलित हो जाता है।

ज़िंदगी के दो रूप हैं— एक ज़िंदगी वह है, जो परलोक की बुनियाद पर बनती है। दूसरी ज़िंदगी वह है, जो संसार की बुनियाद पर बनती है। परलोक की बुनियाद पर बनने वाली ज़िंदगी में मार्गदर्शक का स्थान पैग़ंबर को प्राप्त होता है। आदमी पैग़ंबर के बताए अनुसार अपना विश्वास बनाता है और उसी के बताए अनुसार अपनी ज़िंदगी गुज़ारता है। इसके विपरीत जो ज़िंदगी संसार की बुनियाद पर बनती है, उसमें आदमी अपना मार्गदर्शक ख़ुद होता है और अपनी बुद्धि या मन के अनुसार अपने चिंतन एवं कर्म का ढाँचा बनाता है। पहला अगर ईश्वर का मानने वाला होता है तो दूसरा ख़ुद अपना।

पैग़ंबर के मार्गदर्शन में जो ज़िंदगी बनती है, उसके अनेक भाग

*ईश्वर का घर।

होते हैं— ईश्वर पर विश्वास, फ़रिश्तों पर विश्वास, ईश्वर की किताबों पर विश्वास, ईश्वर के पैग़ंबरों पर विश्वास, क़यामत और मौत के बाद की ज़िंदगी पर विश्वास, स्वर्ग और नरक पर विश्वास, ईश्वर के सृजनहार तथा पालनहार (Creator and Sustainer) होने पर विश्वास। इन विश्वासों के अंतर्गत जो इंसान बनता है, वह ऐसा इंसान होता है कि जो ख़ुद को ईश्वर को सुपुर्द किए हुए होता है। उसकी ज़िंदगी की सारी गतिविधियाँ परलोक पर आधारित हो जाती हैं। उसकी इबादत, उसकी क़ुरबानी, उसका जीना-मरना ईश्वर और रसूल के लिए हो जाता है।

जो ज़िंदगी ख़ुद के मार्गदर्शन से बने, वह एक आज़ाद और बेलगाम ज़िंदगी होती है। उसमें आदमी को इससे वाद-विवाद नहीं होता कि हक़ीक़त क्या है? वह अपनी सोच के अनुसार अपनी पसंद की आस्था बना लेता है। उसके दिन-रात ख़ुद अपनी बुद्धि या मन के मार्गदर्शन में व्यतीत होते हैं। उसकी गतिविधियाँ सारे सांसारिक लाभों के चारों ओर घूमती हैं। वह वैसा बनता है, जैसा वह ख़ुद बनना चाहता है; न कि वैसा, जैसा ईश्वर और रसूल चाहते हैं कि वह बने।

जो लोग किसी पिछले पैग़ंबर के नाम पर किसी धर्म को पकड़े हुए हैं, उनकी धार्मिकता या ईशभक्ति उस समय तक विश्वसनीय नहीं, जब तक वे पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद पर विश्वास न करें। हज़रत मुहम्मद पर विश्वास करना मानो ख़ुद अपने धर्म को

ही अधिक सही और पूरी तरह से अपनाना है। जो लोग हज़रत मुहम्मद पर विश्वास न करें, वे अपने इस कर्म से इस बात का सबूत दे रहे हैं कि वे पैग़ंबर के नाम पर अपनी क़ौमी परंपरा और वर्गीय पक्षपात को अपना धर्म बनाए हुए हैं। जो लोग क़ौमी धर्म के उपासक हों, वे हज़रत मुहम्मद के द्वारा लाए हुए ईश्वरीय धर्म को न पाएँगे । वे अपने पक्षपाती पर्दे के कारण उस सत्य को न देख सकेंगे, जो ईश्वर ने अपने अंतिम पैग़ंबर के द्वारा उनके लिए प्रकट की है, बल्कि जो लोग हक़ीक़त में ईश्वर और पैग़ंबर के मानने वाले हों, उन्हें पैग़ंबरे-इस्लाम का धर्म ख़ुद अपनी ही चीज़ मालूम होगा। वे उसे इस प्रकार लेंगे, जिस प्रकार कोई अपनी खोई चीज़ को दौड़कर ले लेता है।

मौत की तरफ़

हर किसी को मरना है। कोई उससे बच नहीं सकता। हालाँकि हक़ीक़त में मौत के दो रूप होते हैं— एक वह, जबकि आदमी ईश्वर को अपना उद्देश्य बनाए हुए हो। वह ईश्वर के लिए बोलता हो और ईश्वर के लिए ही शांत रहता हो। उसका सारा ध्यान परलोक की ओर लगा हुआ हो। ऐसे आदमी के लिए मौत का मतलब यह है कि वह अपने रचयिता की ओर यात्रा कर रहा था और मौत के

फ़रिश्ते* ने उसके सफ़र को कम करके उसे उसकी मंज़िल तक पहुँचा दिया।

दूसरा आदमी वह है, जिसने अपने मालिक को भुला रखा है। उसका रुकना और उसका चलना ईश्वर के लिए नहीं होता। वह अपने रचयिता को छोड़कर दूसरी ओर भाग रहा है। ऐसे आदमी के लिए मौत का दिन उसकी गिरफ़्तारी का दिन है। उसका उदाहरण उस विद्रोही की तरह है, जो कुछ दिनों तक उद्दंडता करे, उसके पश्चात् उसे पकड़कर अदालत में हाज़िर कर दिया जाए।

प्रत्यक्ष रूप से मौत एक ही है, जो दोनों आदमियों पर आती है, लेकिन दोनों में उतना ही अंतर है, जितना फूल और आग में। एक के लिए मौत ईश्वर का मेहमान बनना है और दूसरे के लिए मौत ईश्वर के बंदीगृह में डाला जाना। एक के लिए मौत स्वर्ग के बाग़ों में जाने का दरवाज़ा है और दूसरे के लिए मौत वह दिन है, जबकि उसको नरक की भड़कती हुई आग में फेंक दिया जाता है, ताकि अपनी उद्दंडता के अपराध में वहाँ वह हमेशा के लिए जलता रहे।

मोमिन** और ग़ैर-मोमिन की पहचान यह है कि मोमिन वह है,

---

* ईश्वर का वह दूत, जो उसकी आज्ञानुसार काम करता हो।

** सच्ची निष्ठा से ईश्वर के आदेशों का पालन करने वाला।

जिसकी नज़र मौत के मामलों की ओर लगी हुई हो, जो मौत के बाद आने वाले संसार में सम्मान प्राप्त करने को अपने संपूर्ण ध्यान का केंद्र बनाए हुए हो। इसके विपरीत ग़ैर-मोमिन वह है, जो ज़िंदगी के मामलों में उलझा हुआ हो, जो वर्तमान संसार में सम्मान और सफलता प्राप्त करने को सबसे बड़ी चीज़ समझता हो।

मौजूदा हालात में ऐसा लगता है कि सफल आदमी वही है, जो वर्तमान संसार में अपनी जड़ें मज़बूत किए हुए हो, लेकिन मौत इस झूठ को पूरी तरह ख़त्म कर देगी। इसके बाद अचानक यह पता चलेगा कि वही आदमी मज़बूत बुनियाद पर खड़ा हुआ था, जिसे संसार वालों ने बेबुनियाद समझ लिया था और उन सारे लोगों की कोई हक़ीक़त ही नहीं थी, जो मौत से पहले के हालात में प्रत्यक्ष रूप से सम्मान एवं उन्नति की ऊँचाइयों पर बैठे हुए दिखाई देते थे।

मौत हर चीज़ को ख़त्म (destroy) कर देगी और इसके बाद वही चीज़ बचेगी, जिसका परलोक के संसार में कोई मूल्य हो— सत्य की पुकार पर ध्यान न देना हमेशा इसलिए होता है कि आदमी के सामने सिर्फ़ मौत से पहले का संसार होता है। आदमी अगर मौत के बाद के संसार को देख ले तो आज ही वह उस ईश्वर के आगे झुक जाए, जिसके आगे उसे कल झुकना है, जबकि कल का झुकना किसी के कोई काम न आएगा।

अंतिम शब्द

एक घंटाघर का किसी चौराहे पर निर्माण कर दिया जाए तो हर आदमी उसमें समय देखता है और अपनी घड़ियाँ उससे मिलाता है। किसी को भी यह सोचने की फ़ुरसत महसूस नहीं होती कि जिन कारीगरों और इंजीनियरों ने उसे स्थापित किया है, वे मुसलमान थे या ग़ैर-मुसलमान। अपनी क़ौम के थे या किसी दूसरी क़ौम के या यह कि उसमें जो घड़ी लगाई गई है, वह कहाँ की बनी हुई है। अपने देश की या किसी अन्य देश की। केवल इस बात का विश्वास कि उससे सही समय पता किया जा सकता है, हर आदमी को उसकी ओर आकर्षित कर देता है। ईश्वरीय धर्म भी सारे इंसानों के मार्गदर्शन के लिए इस प्रकार का एक 'घंटाघर' है, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं होता कि लोग उसको देखें और उससे अपने लिए मार्गदर्शन प्राप्त करें।

इसका कारण क्या है? इसका कारण केवल एक है। लोग समय जानने के लिए गंभीर हैं, लेकिन ईश्वर की बातें जानने के लिए गंभीर नहीं। ईश्वरीय धर्म का संबंध अगली ज़िंदगी के मामले से है और घड़ी का संबंध वर्तमान जीवन के मामले से। लोगों ने जिस चीज़ को अपना मक़सद बना रखा है, उसके बारे में घड़ी की अहमियत उन्हें पता है, लेकिन अगली ज़िंदगी में सफलता को उन्होंने अपना मक़सद ही नहीं बनाया, फिर उसमें मार्गदर्शन देने वाली चीज़ की अहमियत का अहसास उन्हें क्योंकर हो?

फिर ईशभक्ति की माँग केवल यह नहीं है कि उसको मान लिया जाए, बल्कि यह भी ज़रूरी है कि उसके साथ ख़ुद को शामिल भी किया जाए। ईशभक्ति अपनी असल हक़ीक़त की दृष्टि से एक अंदरूनी हालत का नाम है, लेकिन उसी के साथ उसका एक बाहरी रूप भी है। ईश्वर की प्राप्ति किसी आदमी के लिए अत्यंत प्रभावशाली और सबसे बड़ी घटना है और इतनी प्रभावशाली घटना कभी छुपी हुई नहीं रह सकती। एक आदमी को जब सच्चाई मिल जाए तो वह ज़रूर ज़ाहिर होकर रहेगी। ऐसा आदमी बिना अधिकार के चाहेगा कि उसका संपूर्ण वातावरण इस बात का गवाह बन जाए कि उसने ईश्वर की पुकार पर 'लब्बैक'* कहा और उसने स्वार्थ एवं हित की मूर्तियों को तोड़कर उसका साथ दिया। अगर कोई आदमी आंतरिक आस्था का दावेदार हो, लेकिन वह घोषणा और अभिव्यक्ति (expression) से परहेज़ करता हो तो हक़ीक़त में यह इस बात का सबूत है कि वह स्वार्थों का शिकार है और जो लोग ईश्वर की तुलना में अपने हित को प्राथमिकता दें, वे कभी भी ईश्वर को नहीं पाते। हित और पक्षपात ईशभक्ति के विपरीत हैं। नीति एवं पक्षपात के साथ ईशभक्ति का एक आत्मा में मौजूद होना संभव नहीं।

* मालिक की पुकार को स्वीकार करना।

सच्चा रास्ता

मौजूदा हालात में ऐसा लगता है कि सफल आदमी वही है, जो वर्तमान संसार में अपनी जड़ें मज़बूत किए हुए हो, लेकिन मौत इस झूठ को पूरी तरह ख़त्म कर देगी। इसके बाद अचानक यह पता चलेगा कि वही आदमी मज़बूत बुनियाद पर खड़ा हुआ था, जिसे संसार वालों ने बेबुनियाद समझ लिया था और उन सारे लोगों की कोई हक़ीक़त ही नहीं थी, जो मौत से पहले के हालात में प्रत्यक्ष रूप से सम्मान एवं उन्नति की ऊँचाइयों पर बैठे हुए दिखाई देते थे।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-षांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

ISBN 978-93-86589-34-7

9 789386 589347

₹20.00

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com